परमात्मा से मिलने का सहज तरीका...

किसी से मिलने और उससे प्राप्ति के लिए उसकी पहचान और पते की ज़रूरत है। और उस मिलन को स्नेहपूर्ण, सहज और सरल बनाने के लिए उससे सम्बंध, समानता और अधिकार का होना भी उतना ही आवश्यक है । पर हमने अब तक खुद को हमेशा परमात्मा के चरणों की धूल समझा, अपने आप को नीच, पापी, कपटी कह और ऐसे कृत्य कर खुद को इतना नगण्य बना लिया कि परमात्मा से मिलना तो दूर हम उनके करीब तक भी नहीं जा सकते। वो परमात्मा निराकार, गुणों का सागर, प्रेम का सागर, सुख का सागर, शांति का सागर, सत्य का सागर... तो उस सागर से मिलन के लिए हमें नदी तो अवश्य बनना पड़ेगा। हम परमात्मा को कहते हैं त्वमेव माताश्च पिता त्वमेव... और परमात्मा कहते हैं, तुम मेरे लाडले बच्चे, मेरे वंश, मेरी सर्व सम्पत्ति के अधिकारी हो, तुम मेरे हो, तुम्हें मुझसे मिलने के लिए कुछ भी करने की ज़रूरत नहीं, सिर्फ मुझे जानकर, पहचान कर, मुझसा स्वरूप धारण कर, मुझे दिल से याद करने की ज़रूरत है। बस खुद को देह और दैहिक बातों से निकालकर निराकार आत्मा समझ मुझ निराकार परमात्मा से बातें करने की ज़रूरत है। देह और दैहिक बातों से बाहर आना इसलिए ज़रूरी है क्योंकि सारे विकार, सारी बुराइयां, सारे पाप देह से ही सम्बंधित हैं। लेकिन आत्मा इन सबसे परे पवित्र और निर्विकारी है। इसीलिए परमात्मा कहते कि तुम अपने असली, निजी स्वरूप को पहचान लो तो मुझ अपने पिता निराकार परमात्मा शिव को पहचानना, समझना, मुझसे सम्बंध जोड़ना, मुझे याद करना और मुझसे मिलना इतना सहज होगा जितना एक बच्चे को अपने पिता से बात करना या मिलना होता है। इसी मिलन, इसी जुड़ाव, इसी बातचीत को सहज राजयोग कहते हैं। यही राजयोग हमें राजाओं का राजा बनाता है, सम्पूर्ण स्वस्थ बनाता है, और ये केवल परमात्मा ही सिखा सकते हैं। दुनिया में इसी राजयोग के नाम पर कई सारे कठिन योग सिखाए जाते हैं परमात्मा से मिलन का आधार मानकर। लेकिन ये ना हर किसी के वश की बात है और ना आवश्यक। यकीन मानिए, इस संसार में यदि किसी से मिलना सहज है, तो वो केवल और केवल परमात्मा हैं, बस... कुछ पल अपने झूठे देह भान और देह अभिमान के आवरण को उतार कर देखिए... आप उन्हें अपने सामने पायेंगे।

जिस तरह सुनार सोने को परखने के लिए उसे पत्थर पर रगड़ता है कि सोना खरा है या नकली है। वैसे ही अगर हमें परमपिता परमात्मा की सत्य पहचान करनी हो तो उसके लिए भी तो एक पैरामीटर होना चाहिए ना! अब वो पैरामीटर क्या हो सकता है ज़रा ये भी हमें समझना होगा। तो हमारे पास ऐसे पाँच पैरामीटर हैं जिनके आधार से परमात्मा की परख की है, उसे पहचाना जा सक

पहला - जो सर्व धर्म मान्य हो

जैसे एक व्यक्ति को कोई भाई कहता है, कोई मामा कहता है, कोई चाचा कहता है, कोई पिता जी कहता है लेकिन उसका स्वरूप तो एक ही होता है ना! हर बार उसका स्वरूप तो नहीं बदल जाता ना! उसी प्रकार भगवान को कोई ईश्वर कहता, अल्लाह कहता, या कोई एकोंकार कहता लेकिन उसका स्वरूप तो वही होगा ना! बदलना तो नहीं चाहिए ना! सत्य उसको कहा जाता है जिस स्वरूप को हर धर्म वाले स्वीकार करें।

दूसरा - जो सर्वोच्च हो, जिसके ऊपर कोई न हो

जो सर्व का माता-पिता, बंधु-सखा, गुरु-शिक्षक व रक्षक हो उसका कोई माता-पिता न हो, उसका कोई गुरु न हो, उसका कोई शिक्षक न हो, और जिसको रक्षा करने वाले की ज़रूरत न हो।

तीसरा - मनुष्यात्माओं की तरह जन्म-मरण के चक्र में न आते हों

परमात्मा को अजन्मा कहा जाता है। अजन्मा के साथ-साथ उसने गीता में ये भी कहा है कि वह कालों का काल अर्थात् महाकाल। मुझे काल कभी खा नहीं सकता। जिसका जन्म होता है

कर्म भी करना पड़ता है। और उसको कर्म का फल भी भोगना पड़ता है। जो कर्म और कर्म फल के चक्र में आ जाता है उसे हम परमात्मा नहीं कह सकते। क्योंकि उसने स्वयं कहा है कि मैं अकर्ता हूँ तथा अभोक्ता हूँ अर्थात् न करता हूँ और न ही भोगता हूँ।

चौथा - जो परे होते हुए सब कुछ जानता हो अर्थात् सर्वज्ञ हो

इसी कारण से परमात्मा को त्रिकालदर्शी कहा जाता है। जिसके पास तीनों कालों और तीनों लोकों का ज्ञान हो। जो त्रिनेत्री हो, तथा जो मनुष्य को भी ज्ञान का दिव्य चक्षु प्रदान करने वाला हो उसे ही हम परमात्मा कहेंगे।

पाँचवा- जो सर्व गुणों में अनंत हो

जिसकी महिमा के लिए कहा गया है यदि धरती को कागज़ बना दो, सागर को स्याही बना दो, जंगल को कलम बना दो और स्वयं सरस्वती बैठकर परमात्मा की महिमा लिखे तो भी उसकी महिमा लिखी नहीं जा सकती।

उपर्युक्त पाँच कसौटियों पर परख कर देखें जो खरा उतरता हो उसे ही भगवान मानें।

कई लोग शिवलिंग की प्रतिमा को ही भगवान मान लेते हैं। शिवलिंग कल्याण करने के लक्षण के रूप में दर्शाया गया है। जैसे पुलिंग, स्त्रीलिंग। तो पुलिंग माना पुरुष के लक्षण, स्त्री माना स्त्री के लक्षण। उसी तरह परमात्मा सर्व का कल्याण करता है, उसी लक्षण को, उसी कार्य को हमने शिवलिंग कहा, न कि शिव की प्रतिमा को ही भगवान माना। उसका रूप तो ज्योति स्वरूप है। ज्योति स्वरूप को पूजने के लिए ही हमने शिवलिंग की प्रतिमा बनाई। अब आपको स्पष्ट अंतर समझ में आ ही गया होगा कि शिवलिंग शिव ज्योति स्वरूप परमात्मा के रूप की प्रतिमा है, न कि शिव।

हो रहा... मनुष्य आत्माओं का दिव्यीकरण

विश्व में भारत ही एक ऐसा खंड है जिसको प्राचीन व अविनाशी माना जाता है। ये उक्ति भी हमारे होठों पर रहती है कि भारत सोने की चिड़िया था। अगर हम सृष्टि के आदिकाल की बात करें तो वहाँ देवी-देवताओं ही का साम्राज्य था। जिसे हम सतयुग भी कहते हैं। जहाँ हर चीज़ सतोप्रधानता में थी। सृष्टि चक्र में हम चार युग दर्शाते हैं जिसमें सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग और कलियुग। तो सतयुग में हम सभी देवी-देवता के रूप में थे और आज हम कलियुगी काल से गुज़र रहे हैं, जहाँ चारों ओर दुःख, अशांति एवं तमोप्रधानता का साम्राज्य है। हमारी सतयुग से कलियुग की यात्रा को देखें तो पायेंगे कि हमारे पूर्वज देवी-देवता ही थे, ये तो हम सब मानते ही हैं ना। हम सबकी चाहना है कि हम भी ऐसी दुनिया में फिर से जायें पर ये चाहत हमारी कैसे पूर्ण होगी, इस प्रश्न को कौन हल कर पायेगा, ये द्वन्द्व हमेशा मन में बना रहता है। इस प्रश्न का उत्तर देना मनुष्य के वश में नहीं। यह कार्य सिवाय परमात्मा के और कोई कर न सके। कलियुग की घोर अंधियारी रात व सतयुग के पहले प्रहर, प्रभात के संधि के समय जिसको हम संगमयुग कहते हैं, वहाँ परमात्मा हमें सही ज्ञान-योग व अलौकिक पालना देकर देवी-देवताओं की दुनिया में ले जाने योग्य बनाते हैं।

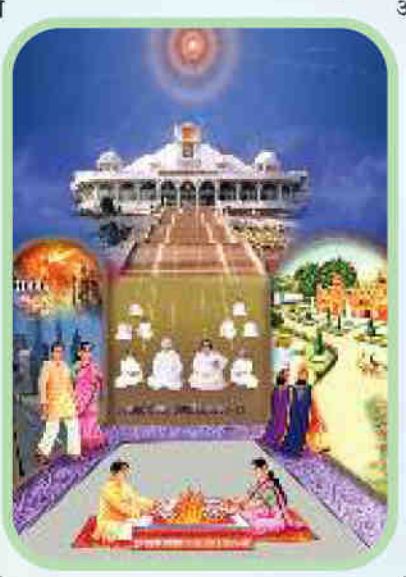

आज मनुष्य में दिव्यता का प्रायः लोप हो गया है। फिर से इसके प्रागट्यकरण अर्थात् मनुष्य में दिव्यता भरने के लिए परमात्मा का सृष्टि पर अवतरित होना होता है। वे अपने ज्ञान-योग की शिक्षा देकर हमारे में मौजूद आसुरियता, कमी-कमज़ोरियों को महायज्ञ में जलाकर सभी को श्रेष्ठ बनाते हैं। इसके लिए देहभान से ऊपर उठकर, आत्मिक भाव में स्थित होकर पुनः आत्मिक अस्तित्व का आधार बनाकर दिव्यगुण सम्पन्न बनाते हैं। जहाँ काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार से मुक्त होकर सभी देवी-देवता बन जाते हैं। तो आप भी ऐसे बनना चाहेंगे? आप भी अपनी सर्व कमी-कमज़ोरियों को इस महायज्ञ में स्वाहा कर ऐसा पावन देवता बन सकते हैं।

परमात्मा के सम्बंध में हमने बहुत कुछ पढ़ा भी है, सुना भी है किंतु फिर भी हम सही अर्थ में उसे न समझ पाये और न ही हम उसे जान पाये। जब जान ही नहीं पाये तो सम्बंध भी कैसे जुड़ पाये! अगर हम शास्त्रों की ही बात ले लें तो कहीं-कहीं इसका उल्लेख है कि परमात्मा का अवतरण धरा पर होता है। शिव पुराण में भी लिखा है कि 'जब ब्रह्मा जी द्वारा सतयुगी सृष्टि रचने का कार्य तीव्र गति से नहीं हुआ और इस कारण वे निरुत्साहित थे, तब शिव ने ब्रह्मा जी की काया में प्रवेश किया, ब्रह्मा जी को पुनर्जीवित किया और उनके मुख द्वारा सृष्टि रची।' शिव पुराण में अनेक बार यह उल्लेख आया है कि भगवान शिव ने पहले प्रजापिता ब्रह्मा को रचा और फिर उन द्वारा सतयुगी सृष्टि को रचा। इस पौराणिक आलेख का भी यही भाव है कि परमपिता परमात्मा शिव प्रजापिता ब्रह्मा के मस्तिष्क(ललाट) में अवतरित हुए और उनके मुख द्वारा ईश्वरीय ज्ञान तथा सहज राजयोग की शिक्षा देकर उन्होंने संसार का कल्याण किया।

महाभारत में लिखा है कि 'भगवान ने ब्रह्मा के तन में प्रविष्ट होकर ज्ञान दिया और सतयुग की पुनः स्थापना की।' स्वयं गीता में लिखा है - 'मैंने पहले यह ज्ञान विवस्वान को दिया था।' सोचने की बात है कि सृष्टि की आदि में वह आदिम वक्ता कौन था? ब्रह्मा ही को तो 'आदि देव' और शिव ही को 'स्वयंभू' अथवा 'आदिनाथ' कहा गया है। ध्यान देने की बात है कि आद्य शंकराचार्य ने भी अपने भाष्य में इस श्लोक की व्याख्या करते हुए कहा है कि भगवान ने नई सृष्टि रचने के समय(सर्ग) ही यह ज्ञान दिया था तथा योग सिखाया था। स्पष्ट है कि तब ज्योति स्वरूप परमात्मा ने प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा ही ज्ञान दिया होगा। इसीलिए ही भारत प्रायः सभी प्राचीन धर्म ग्रन्थों में ज्ञान के उद्गम के साथ ब्रह्मा और शिव ही का नाम जुड़ा हुआ है।

अगर हम सार रूप में इन शास्त्रों की बातों को ही ले लें तो ये निष्कर्ष पर अवश्य ही पहुंचेंगे कि परमात्मा ने ही ब्रह्मा जी के द्वारा ज्ञान व योग

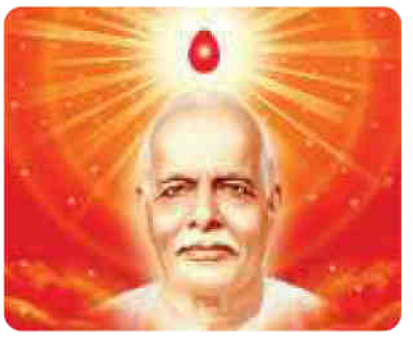

सिखाया होगा। हमने पहले भी बताया कि ये पुनः वही बेला है जहाँ परमात्मा ज्ञान व सहज राजयोग की शिक्षा देकर, सच्चा गीता ज्ञान देकर, पुनः श्रेष्ठ बनाकर स्वर्णिम युग की स्थापना के लिए तैयार कर रहे हैं। कहते भी हैं, परमात्मा ने कैसी दुनिया रची होगी जहाँ मानव मात्र दिव्यता सम्पन्न होंगे। जहाँ दुःख, अशांति का नामोनिशान नहीं होगा। हम सभी भी तो यही चाहते हैं ना! हमारे मनभावन दुनिया का सृजन सिवाय परमात्मा के और भला कौन कर सकेगा! तो आप भी इस यथार्थता को समझें और अपना भाग्य जगायें।